

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, ल्यूक-एक्ट्स का धर्मशास्त्र, सत्र 11, प्रेरितों के कार्य ग्रंथ सूची, एफएफ ब्रूस नए नियम में प्रेरितों के कार्य, प्रेरितों के कार्य की उत्पत्ति और उद्देश्य, पौइन प्रेरितों के कार्य

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा ल्यूक-एक्ट्स के धर्मशास्त्र पर दिए गए अपने व्याख्यान हैं। यह सत्र 11 है, अधिनियम ग्रंथ सूची, एफएफ ब्रूस, नए नियम में अधिनियम, अधिनियमों की उत्पत्ति और उद्देश्य, अधिनियमों में पॉल।

हम ल्यूक और धर्मशास्त्र पर अपने व्याख्यान जारी रखते हैं। ल्यूक के सुसमाचार पर उन व्याख्याओं को पूरा करने के बाद, अब हम ल्यूक की दूसरी पुस्तक, प्रेरितों के कार्य पर अपना ध्यान केंद्रित करते हैं। हमें ग्रंथ सूची से शुरुआत करनी चाहिए। मुझे इसे वहाँ दीवार पर देखना होगा।

मेरे पास चार स्रोत हैं। एफएफ ब्रूस, प्रसिद्ध न्यू टेस्टामेंट विद्वान, जो अब प्रभु के साथ हैं, वास्तव में एक क्लासिक विद्वान थे और उन्होंने अधिनियमों पर शास्त्रीय संदर्भों से भरी एक टिप्पणी लिखी थी, जिसके कारण उन्हें ग्रेट ब्रिटेन में मैनेचेस्टर विश्वविद्यालय में नौकरी मिल गई, जहाँ से वे इंजीलवाद में एक नेता बन गए और कई इंजील न्यू टेस्टामेंट विद्वानों को प्रशिक्षित किया, जिन्होंने दुनिया भर में, विशेष रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका में इंजील सुधार लाने में मदद की और इसका जबरदस्त प्रभाव पड़ा। फिर, बाद में, एक बहुत अधिक परिपक्व न्यू टेस्टामेंट विद्वान के रूप में, उनकी पहली अधिनियमों की टिप्पणी ने क्लासिक्स से न्यू टेस्टामेंट की ओर उनके कदम का प्रतिनिधित्व किया।

उन्होंने न्यू टेस्टामेंट पर यह नई अंतर्राष्ट्रीय टिप्पणी लिखी, द बुक ऑफ एक्ट्स। यह अभी भी पिछली टिप्पणी की विद्वत्ता से प्रेरित है, लेकिन अब यह एक धार्मिक मोड़ लेती है और प्रेरितों के काम के संदेश और प्रेरितों के काम के माध्यम से संप्रेषित पॉल के धर्मशास्त्र से जुड़ी हुई है। डेनिस जॉनसन, न्यू टेस्टामेंट के प्रोफेसर, और अब मैं व्यावहारिक धर्मशास्त्र, शायद होमिलेटिक्स के बारे में सोचता हूँ, कैलिफोर्निया में वेस्टमिंस्टर सेमिनरी में, ने ऐसा किया है। वह जो कुछ भी लिखते हैं वह ठोस, रूढ़िवादी और बहुत मददगार होता है।

यह कोई अपवाद नहीं है: प्रेरितों के काम का संदेश। यह एक संपूर्ण टिप्पणी नहीं है; यह चुनिंदा है, लेकिन यह बहुत, बहुत मददगार है। यह हमें सही दिशा में इंगित करता है और कई तरीकों से हमारी मदद करता है।

हॉवर्ड मार्शल, फिर से, कुछ मायनों में इंजील न्यू टेस्टामेंट विद्वानों को प्रशिक्षण देने में एक नेता के रूप में एफएफ ब्रूस के उत्तराधिकारी हैं। उन्होंने टिंडेल न्यू टेस्टामेंट कमेंट्री श्रृंखला में एक्ट्स की पुस्तक लिखी। प्रतिस्थापन मात्रा, उन्होंने उन्हें बदल दिया है ताकि वे और अधिक महत्वपूर्ण हो जाएं।

यह वास्तव में अच्छा और बुरा है। प्रतिस्थापन खंडों से पहले टिंडेल, बगीचे के विभिन्न प्रकार के ईसाइयों के लिए मेरी पहली सिफारिश थी, जिनके पास पेशेवर प्रशिक्षण नहीं है, जो बाइबल का अधिक विस्तार से अध्ययन करना चाहते हैं क्योंकि वे गहराई में नहीं हैं, लेकिन जैसा कि सर्वसम्मति से कहा गया है, वे यहाँ तक कि, जो एक कमेंटरी श्रृंखला में बहुत ही असामान्य है। वे रूढ़िवादी हैं, वे पाठ्य हैं, वे हर वाक्य से नहीं, बल्कि मूल रूप से नए टेस्टामेंट के हर पैराग्राफ से निपटते हैं, और यहां तक कि बड़ी इकाइयों से भी, निश्चित रूप से, पुराने, बड़े पुराने टेस्टामेंट की किताबों से।

लेकिन प्रतिस्थापन खंड अधिक शैक्षणिक और सहायक हैं, और उन लोगों के लिए, विद्वानों और पादरियों और अन्य लोगों के लिए, प्रेरितों के काम पर हावर्ड मार्शल की पुस्तक वास्तव में बहुत अच्छी है। और यह तीसरी, यह चौथी चीज़ बस शानदार है, जो मनुष्य की समझ से परे है। गंभीरता से, मेरे नोट्स फिर से, इस बार भगवान के लोगों या चर्च पर, लूका में नहीं, बल्कि इस बार प्रेरितों के काम, लूका के दूसरे खंड में।

तो, एफएफ ब्रूस, बुक ऑफ एक्ट्स, न्यू इंटरनेशनल कमेंट्री ऑन द न्यू टेस्टामेंट। परिचय के तौर पर, वह न्यू टेस्टामेंट में एक्ट्स, एक्ट्स की उत्पत्ति और उद्देश्य, और फिर एक्ट्स में पॉल के बारे में बात करते हैं। मेरी पहली नियुक्ति न्यू टेस्टामेंट में प्रशिक्षक के रूप में हुई थी।

स्कूल के दूसरे ही वर्ष में मुझे विनम्रतापूर्वक न्यू टेस्टामेंट और धर्मशास्त्र के सहायक प्रोफेसर के रूप में पदोन्नत कर दिया गया। वह पेंसिल्वेनिया के हैटफील्ड में ओल्ड बाइबिलिकल थियोलॉजिकल सेमिनरी में था, जो अब उस रूप में मौजूद नहीं है। वर्षों बाद मैं व्यवस्थित धर्मशास्त्र के प्रोफेसर के रूप में 25 वर्षों तक सेंट लुइस में कॉव्नेंट सेमिनरी में पढ़ाने गया।

हालाँकि, बाइबिल में एक छात्र के रूप में और फिर न्यू टेस्टामेंट के आधे प्रोफेसर और उन 10 वर्षों के दौरान धर्मशास्त्र के आधे प्रोफेसर के रूप में मुझे जो व्याख्यात्मक आधार मिला, वह मेरे अपने विकास में अमूल्य था। और ब्रूस ने मेरी बहुत मदद की। शायद पॉलिन की उन विशेष पुस्तकों के विशेषज्ञों ने उन्हें नज़रअंदाज़ कर दिया है जिनमें उन्होंने लिखा था, लेकिन फिर भी, उनकी सामग्री ठोस है। ये उपयोगी है।

नए नियम में प्रेरितों के कार्य। प्रेरितों के कार्य का नाम दूसरी शताब्दी के मध्य से ईसाई मूल के इतिहास के दूसरे खंड को दिया गया है, जिसे पहली शताब्दी के एक ईसाई ने लिखा था और एक निश्चित थियोफिलस को समर्पित किया था। इस इतिहास का पहला खंड नए नियम के कैनन में शामिल 27 दस्तावेजों में से एक के रूप में भी मौजूद है।

सेंट ल्यूक के अनुसार, यह वह कार्य है जिसे आम तौर पर सुसमाचार के रूप में जाना जाता है। मूल रूप से, निस्संदेह, ये दोनों खंड एक पूर्ण और स्वतंत्र कार्य के रूप में एक साथ प्रसारित हुए, लेकिन लंबे समय तक नहीं। दूसरे की शुरुआत के अंत से, वास्तव में, जॉन के सुसमाचार के प्रकाशन के तुरंत बाद, चार विहित सुसमाचारों को एक संग्रह में एकत्र किया गया और चार गुना सुसमाचार के रूप में प्रसारित किया जाने लगा।

इसका मतलब यह था कि हमारे दोहरे इतिहास के पहले खंड को दूसरे से अलग करके अन्य लेखकों की तीन रचनाओं से जोड़ दिया गया, जिसमें यीशु की कहानी से संबंधित कमोबेश एक ही विषय शामिल था और उसके पुनरुत्थान के विवरण के साथ समाप्त हुआ। इसलिए, दूसरे खंड को अपना खुद का करियर बनाने के लिए छोड़ दिया गया, लेकिन यह एक महत्वपूर्ण और प्रभावशाली करियर साबित हुआ। बेशक, वह प्रेरितों के काम की पुस्तक के बारे में बात कर रहे हैं।

लगभग उसी समय जब चारों सुसमाचारों को एक संग्रह बनाने के लिए एकत्र किया गया था, ईसाई दस्तावेजों का एक और संग्रह आकार ले रहा था, जिसे पॉलिन एपिस्टल्स का संग्रह कहा जाता है। ये दो संग्रह, सुसमाचार और प्रेरित, जैसा कि उन्हें कहा जाता था, नए नियम का बड़ा हिस्सा बनाते हैं। लेकिन इन दोनों संग्रहों के बीच एक अंतराल होता अगर ईसाई उत्पत्ति के इतिहास का दूसरा खंड नहीं होता, वह दस्तावेज़ जिसे हम संक्षेप में प्रेरितों के काम के रूप में संदर्भित करेंगे।

प्रेरितों के काम ने दोनों संग्रहों को एक दूसरे से जोड़ने में एक अपरिहार्य भूमिका निभाई। जहाँ तक पहले संग्रह का संबंध है, प्रेरितों के काम ने इसका सामान्य परिणाम बनाया है क्योंकि यह पहले संग्रह से, उस संग्रह के चार दस्तावेजों में से एक, तीसरे सुसमाचार का उचित परिणाम था। जहाँ तक दूसरे संग्रह का संबंध है, प्रेरितों के काम ने कथात्मक पृष्ठभूमि प्रदान की है जिसके विरुद्ध पॉल के लेखन को अधिक आसानी से समझा जा सकता है।

इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि प्रेरितों के काम की पुस्तक में पौलुस द्वारा अपने पत्रों में किए गए प्रेरितिक दावे की वैधता के लिए स्पष्ट और ठोस सबूत दिए गए हैं। दूसरी शताब्दी के मध्य में मार्सियन और उनकी शिक्षाओं के बीच विवाद के परिणामस्वरूप प्रेरितों के काम की महत्ता और भी अधिक स्पष्ट हो गई। मार्सियन ने लगभग 144 ई. में रोम में एक क्रांतिकारी सिद्धांत का प्रचार किया, जिसमें कहा गया कि मसीह एक बिल्कुल नए धर्म का प्रवर्तक था, जो उसके आने से पहले की किसी भी चीज़ से पूरी तरह से असंबंधित था, जैसे कि पुराने नियम में इस्राएल को रहस्योद्घाटन, और पौलुस मसीह का एकमात्र प्रेरित था जिसने इस नए धर्म को उसकी शुद्धता में, यानी पुराने नियम या यहूदी प्रभाव से अदूषित, ईमानदारी से संरक्षित किया।

मार्सियन ने वह चीज़ तैयार की जिसे वह नए युग के लिए दैवीय धर्मग्रंथ का सच्चा सिद्धांत मानता था। इस कैनन में दो भाग शामिल थे, एक को गॉस्पेल कहा जाता था, तीसरे गॉस्पेल का उपयुक्त रूप से निकाला गया संस्करण, और दूसरे को एपोस्टल कहा जाता था। मार्सियन की द गॉस्पेल का गठन हमारे ल्यूक के गॉस्पेल द्वारा किया गया था, जिसमें पुराने नियम और यहूदी धर्म के कई संदर्भ हटा दिए गए थे।

मार्सियोन के कैनन में भी प्रेरित था, चर्चों को लिखे गए पॉल के नौ पत्रों और फिलेमोन को लिखे उनके पत्र का एक समान रूप से संपादित संस्करण। मार्सियन के कैनन का प्रकाशन रोमन चर्च और कैथोलिक छोटे-सी विश्वास का पालन करने वाले अन्य चर्चों के लिए एक चुनौती और प्रोत्साहन था। इसने उन्हें पवित्र धर्मग्रंथ का सिद्धांत बनाने के लिए मजबूर नहीं किया, जिसे तब

से, मामूली बदलावों के साथ, चर्च कैथोलिकों द्वारा स्वीकार कर लिया गया है, लेकिन इसने उन्हें उस सिद्धांत को अधिक सटीकता के साथ परिभाषित करने के लिए मजबूर किया।

उनके लिए, नए नियम का कैनन पुराने नियम के कैनन को पीछे नहीं छोड़ता था, बल्कि ईश्वर द्वारा निर्धारित पूरक के रूप में उसके साथ खड़ा था। उनके लिए, सुसमाचार में एक दस्तावेज़ नहीं बल्कि चार शामिल थे, और इन चार में उस एक का सच्चा पाठ शामिल था जिसे मार्सियन ने एक विकृत रूप में प्रकाशित किया था। उनके लिए, प्रेरित में दस नहीं बल्कि तेरह पॉलिन पत्र शामिल थे, और न केवल पॉल के पत्र बल्कि अन्य प्रेरित पुरुषों के पत्र भी शामिल थे।

और सुसमाचार और प्रेरित को एक साथ जोड़ते हुए, प्रेरितों के काम की अब पहले से कहीं ज़्यादा अहमियत लगने लगी, क्योंकि इसने न सिर्फ़ पॉल के प्रेरित होने का अटल सबूत पेश किया, बल्कि इसने दूसरे प्रेरितों के प्रेरित होने का सबूत भी दिया, जिन्हें मार्सियन ने झूठे प्रेरित और यीशु में पाए गए सत्य को भ्रष्ट करने वाले के तौर पर खारिज कर दिया था। ईसाई धर्मग्रंथ में प्रेरितों के काम की अहम जगह की अब उतनी सराहना की गई जितनी पहले नहीं की जा सकती थी। इस सराहना का एक संकेत यह है कि उस दिन से लेकर आज तक सुसमाचार और प्रेरितों के बीच प्रेरितों के काम ने जो स्थान हासिल किया है।

दूसरा शीर्षक है जिसके नाम से इसे तब से जाना जाता है। प्रेरितों के कार्य। जहाँ तक मौजूदा साक्ष्यों की बात है, इसे सबसे पहले यह शीर्षक तीसरे सुसमाचार के एंटी-मार्सियोनाइट प्रस्तावना में मिलता है, जो संभवतः 150 और 180 ई. के बीच का एक दस्तावेज़ है, जो संभवतः सबसे पुराना मौजूदा दस्तावेज़ भी है जो एंटीओक के चिकित्सक ल्यूक को दो खंडों का लेखक बताता है।

प्रेरितों के कार्य का शीर्षक शायद यह इंगित करने के लिए रखा गया था कि पॉल मसीह का एकमात्र वफादार प्रेरित नहीं था, भले ही प्रेरितों के कार्य में अन्य लोगों की तुलना में उसके बारे में बहुत कुछ कहा गया हो। दूसरी शताब्दी के अंत में रोम में रूढ़िवादी हलकों से निकलने वाले एक अन्य दस्तावेज़ में इस बिंदु पर अतिशयोक्तिपूर्ण तरीके से जोर दिया गया है, पवित्र पुस्तकों का मोरेटोरियम कैनन, जहाँ इस खंड को प्रेरितों के कार्य कहा जाता है। मुराटोरियम कैनन को इसलिए कहा गया क्योंकि इसकी खोज 1740 में कार्डिनल एल.ए. मुराटोरी ने की थी।

अधिनियमों की उत्पत्ति और उद्देश्य. दूसरी शताब्दी के मध्य में अधिनियमों द्वारा निभाई गई महत्वपूर्ण भूमिका ने कई विद्वानों को सुझाव दिया है कि इसका अंतिम रूप, किसी भी दर पर, उस भूमिका को निभाने के लिए लगभग उसी समय रचा गया था। इस दृष्टिकोण के विरुद्ध दो बातें विशेष महत्व रखती हैं।

सबसे पहले, समग्र रूप से ल्यूक-एक्ट्स और विशेष रूप से एक्ट्स का ऐतिहासिक, भौगोलिक और राजनीतिक माहौल असंदिग्ध रूप से पहली शताब्दी का है, न कि दूसरी शताब्दी का। दूसरे स्थान पर, कार्य के आंतरिक साक्ष्य यह नहीं दर्शाते हैं कि इसका प्राथमिक उद्देश्य पॉल की प्रेरिताई को प्रमाणित करना था, यह दिखाना था कि अन्य प्रेरित उसके जितने ही वफादार थे या पॉल और अन्य प्रेरितों का प्रतिनिधित्व करना था। पूर्ण पारस्परिक सम्मान और सद्भाव। निश्चित

रूप से, इसने उचित समय पर इन उद्देश्यों की पूर्ति की, लेकिन ये अधिनियमों का मुख्य जोर नहीं हैं।

अधिनियमों के प्राथमिक उद्देश्य को पूर्व ग्रंथ, ल्यूक के सुसमाचार के उद्देश्य से अलग करके नहीं माना जा सकता है, जिसकी यह निरंतरता है। दोनों भाग एक अभिन्न अंग हैं, जिनका एक सुसंगत, सुसंगत उद्देश्य चलता रहता है। और हम यह अनुमान लगाने के लिए नहीं बचे हैं कि वह उद्देश्य क्या हो सकता है।

यह हमारे लिए दोहरे कार्य के आरंभ में ही स्पष्ट रूप से कहा गया है। यहाँ यह स्वयं लेखक के शब्दों में है, संशोधित मानक संस्करण से ल्यूक 1:1 से 4। बहुत से लोगों ने हमारे बीच जो कुछ पूरा किया गया है, उसका एक विवरण संकलित करने का बीड़ा उठाया है, जैसे कि वे उन लोगों द्वारा हमें दिए गए थे जो शुरू से ही प्रत्यक्षदर्शी और शब्द के सेवक थे, यह मुझे भी अच्छा लगा, हे परम श्रेष्ठ थियुफिलुस, पिछले कुछ समय से सब बातों का बारीकी से पालन कर रहा था, कि तुम्हारे लिये एक क्रमबद्ध वृत्तान्त लिखूँ, कि जिन बातों की तुम्हें खबर दी गई है, उन में तुम सच्चाई जान लो।

ल्यूक 1:1 से 4 आरएसवी। इन शब्दों में, ल्यूक न केवल तीसरे सुसमाचार का उद्देश्य बताता है, बल्कि उस संपूर्ण कार्य का भी, जिसका वह सुसमाचार पहला खंड था। ऐसा प्रतीत होता है कि वह स्वयं अपने इतिहास में दर्ज पहले की घटनाओं का चश्मदीद गवाह होने का दावा नहीं कर सकता था, लेकिन उसके पास उस जानकारी तक पहुंच थी जो ऐसे चश्मदीद दे सकते थे।

वह इस तरह की जानकारी के आधार पर खाता तैयार करने वाले पहले व्यक्ति नहीं थे, लेकिन वह अपने खाते के बारे में दावा करते हैं कि यह संपूर्ण और सटीक शोध पर आधारित है और इसे उचित अनुक्रम में व्यवस्थित किया गया है। यहां संक्षेप में कहा जाए कि इस पूरी टिप्पणी में, ब्रूस एक्ट्स की पुस्तक, ल्यूक पर अपने एनआईसीएनटी का उल्लेख कर रहे हैं, और दोहरे काम के लेखकत्व को स्वीकार किया गया है। ल्यूक और लेखकत्व के बाहरी साक्ष्य, अधिस्थगन सूची और मार्सिओनाइट विरोधी प्रस्तावनाओं से परे, दूसरी शताब्दी के शुरुआती दशकों तक चले जाते हैं।

जबकि लूका-प्रेरितों के काम के मूल पाठ में लेखक का नाम नहीं बताया गया है, लूका और लेखकत्व में विश्वास ने प्रेरितों के काम के पाठ के एक या दो संस्करणों में बहुत पहले ही अपना रास्ता बना लिया था, जैसा कि अध्याय 1128 और 2013 में व्याख्या और नोट्स से पता चलता है। सामान्य रूप से नए नियम के लेखन और विशेष रूप से लूका-प्रेरितों के काम के साक्ष्य बाहरी साक्ष्य के साथ संघर्ष नहीं करते हैं, और वास्तव में, कार्य स्वयं बाहरी साक्ष्य के साथ संघर्ष दिखाता है, और वास्तव में, क्षमा करें, यह संकेत दिखाता है कि यह स्वयं कार्य करता है। मैं उस वाक्य को फिर से दोहराने जा रहा हूँ।

सामान्य तौर पर न्यू टेस्टामेंट लेखन के साक्ष्य, और विशेष रूप से ल्यूक-एक्ट्स के साक्ष्य, बाहरी साक्ष्य के साथ संघर्ष नहीं करते हैं, और वास्तव में, कार्य स्वयं किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा रचित होने के संकेत दिखाता है जो समय-समय पर इसका साथी था। पॉल और जो उसके साथ रोम गए, जहां हम जानते हैं कि ल्यूक उसकी कंपनी में था। कुलुस्सियों 4.4 और फिलेमोन 24 देखें। जब

पॉल और उसके कुछ दोस्तों द्वारा की गई यात्राओं से संबंधित अधिनियमों की कथा के कुछ हिस्सों को पहले व्यक्ति बहुवचन में डाला जाता है, जहां से उन्हें "हम" खंड के रूप में जाना जाता है, तो सबसे उचित अनुमान यह है कि संपूर्ण कार्य का लेखक उन विशेष यात्राओं पर पॉल के साथ मौजूद था।

तब ल्यूक ने घोषणा की कि अपना इतिहास लिखने का उनका उद्देश्य एक निश्चित थियोफिलस को ईसाई धर्म की उत्पत्ति का सटीक और व्यवस्थित विवरण देना था, जिसके बारे में थियोफिलस को पहले से ही कुछ जानकारी थी। कथा के बाद के भाग के लिए, वह काफी हद तक अपने अनुभवों पर आधारित होगा। पहले भाग के लिए, वह विश्वसनीय प्रत्यक्ष मुखबिरो पर निर्भर रह सकता था।

उनका पहला खंड, संक्षेप में, यीशु के वचन, कार्य, पीड़ा और विजय के मंत्रालय के प्रेरितिक साक्ष्य का एक रिकॉर्ड है। उनका दूसरा खंड यीशु के पुनरुत्थान के बाद की कहानी पर आधारित है और इसे लगभग 30 वर्षों तक जारी रखता है। वह यहूदिया से रोम तक ईसाई धर्म की प्रगति का पता लगाता है और शाही अधिकारियों की पूर्ण सहमति के साथ साम्राज्य के केंद्र में सुसमाचार के मुख्य प्रचारक द्वारा इसकी घोषणा के साथ समाप्त होता है।

जब हम उस तरीके की जांच करते हैं जिसमें ल्यूक ने अपनी कथा को विकसित किया है, तो हम विशेष रूप से दूसरे खंड में उसके क्षमाप्रार्थी जोर से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकते। वह उन आरोपों के खिलाफ ईसाई धर्म की रक्षा करने को लेकर चिंतित हैं जो पहली शताब्दी के उत्तरार्ध में लोकप्रिय रूप से, उचित रूप से नहीं, लगाए गए थे। हमें यह समझना चाहिए कि रोमन साम्राज्य में कानून और व्यवस्था द्वारा कुछ दुकान स्थापित करने वालों की नजर में, ईसाई धर्म की शुरुआत एक गंभीर दुर्घटना, एक गंभीर बाधा के साथ हुई थी।

इसके संस्थापक को राजद्रोह के आरोप में एक रोमन गवर्नर द्वारा मौत की सजा सुनाई गई है, और जिस आंदोलन का उन्होंने उद्घाटन किया, वह रोमन प्रांतों और रोम दोनों में, जहां भी फैला, वहां हंगामा और अव्यवस्था दिखाई दी। ल्यूक इस बाधा को कम करने या यूँ कहें कि इसे पूरी तरह से दूर करने के लिए खुद को तैयार करता है। ईसा मसीह को सूली पर चढ़ाए जाने को न्याय के घोर गर्भपात के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

सच है, उस पर पोंटियस पीलातुस के सामने राजद्रोह का आरोप लगाया गया था, लेकिन पीलातुस ने उसे आरोपों के लिए दोषी नहीं ठहराया, और गैलील के टेटार्क हेरोदेस एंटीपास ने सहमति व्यक्त की कि उनमें कोई दम नहीं था। ल्यूक 23 श्लोक 13 और निम्नलिखित। यह यरूशलेम के मुख्य पुजारियों का प्रभाव और उनके द्वारा उकसाए गए शहर की भीड़ का कोलाहल था, जिसने पीलातुस को अपने फैसले के खिलाफ, मौत की सजा देने के लिए मजबूर किया, जिसकी उन्होंने मांग की थी।

इसी तरह, अधिनियमों में, विभिन्न प्रकार के अधिकारी, गैर-यहूदी और यहूदी, पॉल और अन्य ईसाई मिशनरियों के प्रति सद्भावना दिखाते हैं या कम से कम स्वीकार करते हैं कि उनके

विरोधियों द्वारा उनके खिलाफ लगाए गए आरोपों का कोई आधार नहीं है। साइप्रस में, द्वीप की प्रतिष्ठित समर्थक परिषद प्रेरितों और उनके संदेश से काफी प्रभावित है। अध्याय 13:7, और 12.

प्रेरितों के काम 13:7, जिसे वह कहा जाता है, बार-यीशु नाम के एक यहूदी झूठे भविष्यवक्ता की बात करता है। वह परिषद-समर्थक सर्जियस पॉलस के साथ था, जो एक बुद्धिमान व्यक्ति था जिसने बरनबास और शाऊल को बुलाया और परमेश्वर का वचन सुनने की कोशिश की। श्लोक 12, तब समर्थक परिषद ने जो कुछ हुआ था उसे देखकर विश्वास किया, क्योंकि वह प्रभु की शिक्षा से चकित था।

प्रभु की शिक्षा जो कुछ उसने देखा, उसके साथ संयुक्त है, अर्थात्, पॉल ने झूठे भविष्यवक्ता को श्राप दिया और उसे अस्थायी रूप से अंधा कर दिया क्योंकि उस व्यक्ति ने सुसमाचार का विरोध किया था, और यह भगवान से फैसले के बारे में पॉल की प्रतिक्रिया प्राप्त करने के लिए पर्याप्त था। पुनः, ईश्वर की ओर से अस्थायी निर्णय। फिलिप्पी में, कॉलोनी के मुख्य कॉलेजिएट मजिस्ट्रेट ने पॉल और सीलास से उनकी अवैध पिटाई और कारावास के लिए माफ़ी मांगी।

अध्याय 16:37 और निम्नलिखित। तुम्हें याद है क्या हुआ था। पौलुस ने एक दासी में से दुष्टात्मा को बाहर निकाला।

लोगों को भड़काया गया, पौलुस को गिरफ्तार किया गया और सीलास को पीटा गया, और काठ में ठूस दिया गया। परमेश्वर ने भूकंप लाकर उन्हें चमत्कारिक ढंग से मुक्त कर दिया, और जाहिर है, लोग जेल में ही रहे। वे भागे नहीं।

पौलुस और सीलास ने जेलर को आश्चस्त किया कि वह आत्महत्या करने जा रहा था क्योंकि उसने अपने कैदियों को भागने पर अपनी जान की सज़ा देकर बचाया था, और हम सब यहाँ हैं। ऐसा मत करो। उसने पूछा कि बचने के लिए उसे क्या करना चाहिए।

मुझे ठीक-ठीक पता नहीं है कि उसके प्रश्न का क्या मतलब है, लेकिन हम जानते हैं कि पॉल की प्रतिक्रिया में उसका इरादा क्या था। प्रभु यीशु पर विश्वास रखें, आप बच जायेंगे, आप और आपका घराना, आपका परिवार। वैसे भी, उसे विश्वास था कि उसने बपतिस्मा ले लिया है, और पद 36 में, जब दिन था, मजिस्ट्रेटों ने पुलिस को यह कहते हुए भेजा कि उन लोगों को जाने दो, और जेलर ने पॉल को उन शब्दों की सूचना दी और कहा कि मजिस्ट्रेटों ने तुम्हें जाने देने के लिए भेजा है इसलिए आओ अब बाहर निकलो और कुशल से चले जाओ, परन्तु पौलुस ने उन से कहा, उन्होंने ने हम को जो रोमी नागरिक हैं, सरेआम पीटा है, और बन्दीगृह में डाल दिया है, और क्या अब वे हमें छिपकर भी निकाल देते हैं? नहीं, उन्हें स्वयं आकर हमें बाहर ले जाने दीजिए।

पुलिस ने मजिस्ट्रेटों को ये शब्द बताए, और जब उन्होंने सुना कि वे रोमन नागरिक हैं, तो वे डर गए, इसलिए वे आए और उनसे माफ़ी मांगी, उन्हें बाहर निकाला, और उनसे शहर छोड़ने को कहा। ओह, कुरिन्थ में, यह प्रेरितों के काम 37 का अध्याय 16 था और उसके बाद, कुरिन्थ में गैलियो, अखाया की समर्थक परिषद ने फैसला सुनाया कि स्थानीय यहूदी समुदाय द्वारा पॉल और उनके सहयोगियों के खिलाफ लगाए गए आरोप यहूदी धर्म के आंतरिक मामलों से संबंधित हैं

और उन्हें रोमन कानून के खिलाफ किसी भी अपराध के लिए निर्दोष घोषित किया। यह रोमियों, क्षमा करें, प्रेरितों के काम 18:12 और उसके बाद है।

परन्तु जब अखाया के हाकिम गैलियो ने पौलुस पर एक होकर चढ़ाई की, और उसे न्यायाधिकरण के सामने लाकर कहने लगे, कि यह मनुष्य लोगों को व्यवस्था के विरुद्ध परमेश्वर की आराधना करने के लिए उकसा रहा है। परन्तु जब पौलुस अपना मुंह खोलने ही को था, तो गलियो ने यहूदियों से कहा, हे यहूदियों, यदि यह अधर्म या घृणित अपराध का मामला होता, तो मेरे पास तुम्हारी शिकायत स्वीकार करने का कारण होता। लेकिन चूंकि यह शब्दों और नामों और आपके अपने कानून के बारे में प्रश्नों का मामला है, इसलिए इसे स्वयं ही देखें।

मैं इन चीजों का न्यायाधीश बनने से इनकार करता हूं। और उसने उन्हें न्यायाधिकरण से बाहर निकाल दिया। ओह, अधिनियम 18:12 और निम्नलिखित।

इफिसुस में, एशिया प्रांत के प्रमुख नागरिक, एशियार्क, पॉल के मित्र हैं। और नगर प्रशासन के मुख्य कार्यकारी अधिकारी ने उन्हें सार्वजनिक अपवित्रीकरण के आरोप से मुक्त कर दिया। 19:31, 35 और निम्नलिखित।

और यहाँ तक कि एशियाइयों में से कुछ ने, जो उसके मित्र थे, उसके पास संदेश भेजकर आग्रह किया था कि वह थिएटर में न जाए। और जब नगर लिपिक ने भीड़ को शांत किया, जो इफिसियों की अरतिमिस को पुकार रहे थे और पौलुस को अंदर लाना चाह रहे थे, नगर लिपिक ने भीड़ को शांत किया। उसने कहा, हे इफिसुस के लोगो, कौन नहीं जानता कि इफिसियों का नगर महान अरतिमिस के मन्दिर का रखवाला है? यह प्राचीन विश्व के आश्चर्यों, महान मंदिर और आकाश से गिरने वाले पवित्र पत्थर में से एक था।

सो यह जानते हुए कि इन बातों का इन्कार नहीं किया जा सकता, तुम्हें शान्त रहना चाहिए और कोई उतावलापन नहीं करना चाहिए, क्योंकि तुम उन मनुष्यों को यहाँ ले आए हो जो न तो अपवित्र हैं और न ही हमारी देवी की निन्दा करने वाले हैं। इसलिए, यदि डेमेट्रियस और उसके साथ के कारीगरों को किसी के खिलाफ शिकायत है, तो अदालतें खुली हैं, और समर्थक परिषदें हैं।

उन्हें एक दूसरे के खिलाफ आरोप लगाने दो। लेकिन अगर तुम सोचते हो, कुछ और पूछना चाहते हो, तो इसे एक नियमित सभा में सुलझाया जाएगा। क्योंकि हम वास्तव में आज दंगा करने के आरोप में फंसने के खतरे में हैं, क्योंकि इस हंगामे को सही ठहराने के लिए हमारे पास कोई कारण नहीं है।

और जब उसने ये बातें कही, तो उसने सभा को विदा कर दिया। फिलिस्तीन में, अभियोजक फेलिक्स और फेस्टस ने क्रमिक रूप से पौलुस को उन गंभीर अपराधों के लिए निर्दोष पाया, जिनका आरोप महासभा ने उस पर लगाया था। यहूदी मुवक्किल, राजा हेरोद अग्रिप्पा द्वितीय और उसकी बहन बर्निस इस बात पर सहमत हैं कि उसने ऐसा कुछ भी नहीं किया है जिसके लिए उसे मृत्युदंड या कारावास दिया जाए।

प्रेरितों के काम 24:1 से 26:32 तक। और जब वह रोमी नागरिक के रूप में रोम में सम्राट के समक्ष अपना मामला सुनाने के लिए अपील करता है, तो वह उस शहर में दो साल तक अपनी मिशनरी गतिविधि को निरंतर निगरानी में जारी रखता है, बिना किसी के उसे रोकने की कोशिश किए। प्रेरितों के काम 28, आयत 30 और 31।

पॉल अपने खर्च पर पूरे दो साल तक वहाँ रहा और अपने पास आने वाले सभी लोगों का स्वागत किया, परमेश्वर के राज्य की घोषणा की और उन्हें प्रभु यीशु मसीह के बारे में पूरी निर्भीकता और बिना किसी बाधा के शिक्षा दी। प्रेरितों के कृत्यों के अंतिम शब्द। यदि ईसाई धर्म इतना अराजक आंदोलन होता, जैसा कि व्यापक रूप से माना जाता था, तो पॉल को निश्चित रूप से उन शाही रक्षकों द्वारा इसका प्रचार करने की अनुमति नहीं दी जाती, जिनके प्रभारी वह थे।

तो फिर, यह कैसे पूछा जा सकता है कि क्या ईसाई धर्म की प्रगति में इतना संघर्ष और अव्यवस्था शामिल थी? ल्यूक इसके लिए यहूदी अधिकारियों को जिम्मेदार ठहराता है। यह यरूशलेम महासभा ही थी जिसने फेलिक्स और फेस्तुस से पहले पीलातुस और पॉल से पहले यीशु पर मुकदमा चलाया था। रोमन प्रांतों में सुसमाचार की घोषणा होने पर होने वाली अधिकांश गड़बड़ी स्थानीय यहूदी समुदायों द्वारा भड़काई गई थी, जिन्होंने स्वयं सुसमाचार को स्वीकार करने से इनकार कर दिया था और जब उनके गैर-यहूदी पड़ोसियों ने इस पर विश्वास किया तो वे नाराज हो गए थे।

फिर हमें ऐसे काम के लिए एक उपयुक्त जीवन सेटिंग की तलाश करनी होगी जो इस तरह से क्षमाप्रार्थी हो। बार-बार, ल्यूक दिखाता है कि ईसाई धर्म अराजक नहीं था। यह काफी हद तक वैध और रोमन कानून का सम्मान करने वाला था।

यह थियोफिलस और प्रेरितों की पुस्तक के अन्य सभी श्रोताओं और पाठकों को आकर्षित करने के लिए था। हाल ही में एक आकर्षक सुझाव में 66 से 70 ईस्वी की अवधि की ओर इशारा किया गया था जब ईसाई धर्म के मुख्य आरोप लगाने वाले, फिलिस्तीन में यहूदी अधिकारियों ने साम्राज्य के खिलाफ विद्रोह करके रोमन लोगों की नजर में खुद को पूरी तरह से बदनाम कर लिया था। उन वर्षों में, इस बात पर जोर देना विशेष रूप से प्रभावी होता कि, विद्रोही यहूदियों के विपरीत, ईसाई साम्राज्य के प्रति विश्वासघाती नहीं थे।

वास्तव में, यहूदी अधिकारियों ने हमेशा ईसाई धर्म को अस्वीकार करने की पूरी कोशिश की थी। मेरे मन में एफएफ ब्रूस के लिए बहुत सम्मान है, लेकिन मुझे नहीं लगता कि इस थीसिस ने इस अच्छी टिप्पणी को लिखने के बाद के समय में जीत हासिल की है। निश्चित रूप से, प्रेरितों के काम या यहाँ तक कि ल्यूक में भी ऐसा कुछ नहीं है जो यह मानता हो कि यरूशलेम के मंदिर में शहर का विनाश 70 ई. में लिखे जाने से पहले हुआ था।

लेकिन कुछ साल पहले एक और घटना घटी थी, जिसके बारे में हमें उम्मीद थी कि यह घटना उसके कुछ समय बाद लिखे गए एक क्षमाप्रार्थी दस्तावेज़ में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होगी। यह रोम के ईसाइयों का उत्पीड़न था, जो 64 ई. की भीषण आग के बाद हुआ था। इसने आधिकारिक नीति के अंत को चिह्नित किया, जिसे पॉल ने 50 के दशक में बहुत मददगार पाया था।

लूका द्वारा 60 ई. से पहले के वर्षों में ईसाई धर्म के पक्ष में शाही अधिकारियों के निर्णयों का वर्णन करना अप्रासंगिक लग सकता है, जब सभी जानते हैं कि 60 के दशक में नीरो की कार्रवाई में उन निर्णयों को पूरी तरह से उलट दिया गया था। निश्चित रूप से, 68 ई. में नीरो के शासनकाल के अंत में, इन अनुकूल निर्णयों का वर्णन यह सुझाव देने के लिए किया गया होगा कि नीरो की ईसाई-विरोधी नीति उस बदनाम सम्राट द्वारा व्यक्तिगत रूप से एक ऐसे आंदोलन पर एक गैर-जिम्मेदार और आपराधिक हमला था, जिसकी निर्दोषता को रोमन प्राधिकरण के कई योग्य प्रतिनिधियों द्वारा पर्याप्त रूप से प्रमाणित किया गया था। लेकिन वास्तव में अधिनियमों में कोई संकेत नहीं है कि नीरो की ईसाई-विरोधी नीति अभी तक प्रकट नहीं हुई थी जैसा कि वर्ष 64 में हुआ था।

यह तथ्य कि पॉल की मृत्यु मेरे लिए एक अच्छे तर्क की तरह लगती है, तथ्य यह है कि पॉल की मृत्यु, जो परंपरागत रूप से नेरोनियन उत्पीड़न की एक घटना थी, अधिनियमों में वर्णित नहीं है, ल्यूक के उद्देश्य के लिए पुस्तक की डेटिंग के लिए निर्णायक नहीं है। पूरा हुआ जब वह पॉल को रोम ले आया। लेकिन, यदि वास्तव में, अधिनियमों के लिखे जाने से पहले पॉल की निंदा की गई थी और उसे मार डाला गया था, तो हम पुस्तक में एक अलग माहौल और जोर की उम्मीद कर सकते थे, खासकर अंत में, जो हम वास्तव में पाते हैं। यह मान लेना बेहतर है कि जब अधिनियम लिखे गए थे, तो ईसाई धर्म संदिग्ध था लेकिन अभी तक प्रतिबंधित नहीं किया गया था।

यदि हम ल्यूक के इतिहास को 64 के उत्पीड़न से थोड़ा पहले की तारीख दे सकते हैं, तो हम काम के लिए एक उचित जीवन सेटिंग पाते हैं। पॉल का रोम में आगमन, दो वर्षों तक वहां उनकी प्रेरितिक गवाही, सीज़र से उनकी अपील के कारण हुई कानूनी प्रक्रिया ने ईसाई धर्म को रोमन मध्य वर्ग के सभी लोगों के ध्यान में ला दिया होगा। पहले, अगर उन्हें इसके बारे में कुछ भी पता था, तो उन्होंने इसे उन घृणित पूर्वी पंथों में से एक के रूप में सोचा था, जिन्होंने शहर के निचले वर्गों को संक्रमित किया था क्योंकि ओरोन्टेस के सीवरों ने खुद को तिबर में छोड़ दिया था।

लेकिन पॉल के मामले ने शायद कुछ लोगों को ईसाई धर्म में थोड़ी और दिलचस्पी लेने के लिए प्रेरित किया होगा। अगर थियोफिलस रोम के बुद्धिमान पाठक वर्ग या बल्कि सुनने वाले लोगों का प्रतिनिधि था, तो यहाँ लूका के पास ऐसे लोगों को ईसाई धर्म के उदय और प्रगति के बारे में अधिक सटीक विवरण प्रदान करने का अवसर था, जो उन्हें कहीं और मिलने की संभावना नहीं थी और साथ ही रोमन कानून के संबंध में पॉल और अन्य ईसाइयों की बेगुनाही को सही साबित करने का भी मौका था। लूका की कहानी को सीधे तौर पर बचाव के लिए सबूत के तौर पर इस्तेमाल करने के लिए निर्देशित नहीं किया जा सकता था, जब पॉल की अपील शाही अदालत में सुनवाई के लिए आई थी।

इसमें शामिल कुछ शाही सामग्री उस उद्देश्य के लिए उपयोगी रही होगी, लेकिन ल्यूक में बहुत कुछ है जो फोरेंसिक रूप से काफी अप्रासंगिक होगा। उदाहरण के लिए, हम अध्याय 37 में यात्रा और जहाज़ की तबाही के विवरण या पवित्र आत्मा की प्रमुख भूमिका पर जोर के बारे में सोच सकते हैं। क्या पवित्र आत्मा पर यह जोर उस बुद्धिमान रोमन जनता के लिए भी उतना ही अप्रासंगिक होता, जिसकी दृष्टि में ल्यूक था? उनमें से अधिकांश के लिए, इसका कोई मतलब नहीं रहा होगा, लेकिन थियोफिलस स्वयं भी नए विश्वास में परिवर्तित हो सकता था।

किसी भी मामले में, ल्यूक यह स्पष्ट करना चाहता है कि इस विश्वास की प्रगति केवल मानव नियोजन का प्रश्न नहीं था। इसे एक दैवीय एजेंसी द्वारा नियंत्रित किया गया था। एक तरह से, इसने ल्यूक के क्षमाप्रार्थी उद्देश्य में योगदान दिया होगा, हालाँकि रोमन कानून अदालत में याचिका के रूप में इसका अधिक उपयोग नहीं होगा।

ल्यूक, वास्तव में, उस विशेष प्रकार के क्षमाप्रार्थी में पहले ईसाई क्षमाप्रार्थी में से एक है, जो ईसाई धर्म के कानून-पालन करने वाले चरित्र को स्थापित करने के लिए धर्मनिरपेक्ष अधिकारियों को संबोधित किया जाता है। वह निश्चित रूप से अग्रणी है, लेकिन क्षमाप्रार्थी के अन्य रूप उसके काम के दौरान दिखाई देते हैं, खासकर प्रेरितों के काम के कुछ भाषणों में। इस प्रकार, अध्याय 7 में स्टीफन का भाषण यहूदियों के खिलाफ ईसाई क्षमाप्रार्थी का प्रोटोटाइप है, जो यह प्रदर्शित करने के लिए डिज़ाइन किया गया है कि ईसाई धर्म और यहूदी धर्म नहीं, मूसा और भविष्यवक्ताओं के माध्यम से दिए गए रहस्योद्घाटन की सच्ची पूर्ति है।

इसी तरह, अध्याय 17 में एथेंस में पॉल का भाषण, मूर्तिपूजकों के खिलाफ ईसाई धर्म के बचाव के शुरुआती उदाहरणों में से एक है, जिसका उद्देश्य यह दिखाना है कि ईश्वर का सच्चा ज्ञान सुसमाचार में दिया गया है, न कि मूर्तिपूजा के मूर्तिपूजक व्यर्थता में। अध्याय 26 में अग्रिप्पा के सामने पॉल का भाषण, निश्चित रूप से, उनके अपने मिशनरी करियर के लिए सबसे बड़ा बचाव है। प्रेरितों के काम में पॉल।

पॉल ने अपने कई पत्रों में उन लोगों के खिलाफ अपने प्रेरितिक दर्जे का बचाव करना ज़रूरी समझा जिन्होंने इसे नकार दिया था और अपने दावे के समर्थन में एक प्रेरित के संकेतों की अपील की थी जो उसकी सेवकाई में शामिल हुए थे। बेशक, उनके लिए इन संकेतों का विस्तार से वर्णन उन लोगों को करना ज़रूरी नहीं था जिन्होंने इनका प्रत्यक्ष अनुभव किया था, लेकिन उनके पत्रों के अन्य पाठक इस अपील की वैधता के बारे में अनिश्चित हो सकते थे यदि प्रेरितों के काम की पुस्तक में लूका द्वारा संरक्षित पॉल के प्रेरितिक कार्यों का रिकॉर्ड न होता। कोई भी व्यक्ति प्रेरितों के काम को पढ़कर प्रेरित होने के लिए पॉल के आह्वान की वास्तविकता पर संदेह नहीं कर सकता था।

यह बात दूसरी सदी की शुरुआत में ही स्पष्ट हो गई थी। टर्टुलियन उन विधर्मियों, खास तौर पर मार्सियोनाइट्स की असंगतता की ओर इशारा करते हैं, जिन्होंने प्रेरितों के काम के अधिकार को अस्वीकार कर दिया, लेकिन पौलुस के प्रेरितिक अधिकार को इतने आत्मविश्वास और विशेष रूप से अपील की। उद्धरण, आपको सबसे पहले हमें यह दिखाना होगा कि यह पौलुस कौन था जो उनसे कहता है।

प्रेरित बनने से पहले वह क्या था? वह कैसे प्रेरित बना? यह टर्टुलियन के विधर्मियों के खिलाफ नुस्खे में है। बेशक, प्रेरितों के काम की मदद के बिना इन सवालों का उचित जवाब देना मुश्किल था। जो लोग प्रेरितों के काम को दूसरी सदी के मध्य में लिखते हैं और इसे मार्सियोनाइट विरोधी प्रतिक्रिया का उत्पाद मानते हैं, वे शायद यह मान लें कि इसका एक उद्देश्य यह दिखाना है कि पतरस और बाकी बारह भी पॉल की तरह ही प्रेरित थे, जिसे मार्सियोन ने नकार दिया था, लेकिन

यह और भी निर्णायक रूप से दिखाता है कि संयोग से पॉल भी पतरस और बाकी बारह की तरह ही प्रेरित था, और वास्तव में, उसने उन सभी की तुलना में अधिक परिश्रम किया।

1 कुरिन्थियों 15:10 की तुलना करें, जो कि बिल्कुल वही है जो वह कहता है, और इसे दिखाने में, प्रेरितों के काम ने लूका के तत्काल इरादे से कहीं अधिक सफलता प्राप्त की होगी। इस दृष्टिकोण के लिए कुछ कहा जा सकता है कि पॉल का प्रभाव उसके एजियन मिशन क्षेत्र में कम हो गया, विशेष रूप से एशिया के प्रांत में उसके जाने के तुरंत बाद, और उसके यहूदी विरोधियों ने एक अस्थायी जीत हासिल की। यह एक उचित अनुमान है जिसे ब्रूस 2 तीमुथियुस 1:15 से लिखता है और यह प्रेरितों के काम 20:29 और 30 में पॉल की भविष्यवाणी के अनुरूप है, लेकिन यदि ऐसा है, तो यह बहुत ही अस्थायी जीत थी, इससे पहले कि पॉल का नाम और प्रसिद्धि उन क्षेत्रों में दृढ़ता से फिर से स्थापित और सम्मानित हो जाए, जहां उसने सुसमाचार प्रचार किया था।

पॉल की स्मृति की इस पुष्टि के लिए दो कारण बताए जा सकते हैं। सबसे पहले, यरूशलेम के पतन और वहां के चर्च के निपटान ने यहूदी पार्टी की प्रतिष्ठा को भारी झटका दिया, और दूसरी बात, एजियन चर्चों के बीच अधिनियमों का प्रसार उस जनता की तुलना में अधिक व्यापक था, जिसे ल्यूक ने पहली बार अपने इतिहास को संबोधित किया था। पॉल में रुचि का पुनरुद्धार लाया है। वास्तव में, जैसा कि एडवर्ड जे. गुडस्पीड ने सुझाव दिया है, इसने उनके पत्रों के संग्रह को एक साहित्यिक संग्रह में और चर्चों, कॉर्पस पॉलिनम, पॉलीन कॉर्पस के बीच उनके प्रसार को प्रेरित किया है।

पॉल, निस्संदेह, ल्यूक का नायक है। वह हमें प्रेरित की कितनी अमिट तस्वीर देता है, और हमें यह तस्वीर देकर, उसने ईसाई विस्तार के रिकॉर्ड में कितना योगदान दिया है। वास्तव में, उसकी कथा सभ्यता के इतिहास के लिए सर्वोच्च मूल्य की एक स्रोत पुस्तक है। यह अच्छी बात हो सकती है या नहीं भी हो सकती है कि आज दुनिया के इतने बड़े हिस्से में ईसाई धर्म को एक यूरोपीय धर्म के रूप में देखा जाता है, लेकिन ऐसा कैसे हुआ कि एशिया में पैदा हुआ एक धर्म एशियाई सभ्यता के बजाय यूरोपीय सभ्यता से इतना अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है।

उत्तर निश्चित रूप से यह है कि ईश्वर की कृपा से, इसकी स्थापना के बाद के तीन दशकों में इसका प्रमुख दूत और मिशनरी एक रोमन नागरिक था, जिसने देखा कि रोमन साम्राज्य के रणनीतिक केंद्रों और संचार को ईसा के राज्य की सेवा में कैसे बदला जा सकता है और उन केंद्रों में और संचार की उन पंक्तियों के साथ ईसाई धर्म को स्थापित किया। “ 10 वर्षों से कुछ अधिक समय में सेंट पॉल ने साम्राज्य के चार प्रांतों गैलाटिया मैसेडोनिया अचिया और एशिया में एक चर्च की स्थापना की। 47 ई.पू. से पहले इन प्रांतों में 57 ई.पू. तक कोई चर्च नहीं था, पॉल ऐसे बोल सकता था मानो उसका काम वहां पूरा हो गया हो और वह बिना किसी चिंता के सुदूर पश्चिम में व्यापक दौरो की योजना बना सकता था, कहीं ऐसा न हो कि जिन चर्चों की उसने स्थापना की थी, वे उसकी अनुपस्थिति में उसकी अनुपस्थिति में नष्ट हो जाएं। मार्गदर्शन और समर्थन।”

रोलैंड एलन मिशनरी तरीके सेंट पॉल या हमारे और ल्यूक इस उद्यम के इतिहासकार हैं जो विश्व इतिहास में मानव इतिहास में सबसे दूरगामी में से एक है। वह स्पष्ट रूप से दिखाता है कि यह कैसे किया गया। आम तौर पर कहें तो, पॉल की गतिविधि कुछ केंद्रों पर आधारित थी जहां से

उन्होंने अपनी लंबी और छोटी यात्राएं कीं और जो वर्षों के दौरान, एक प्रांत से दूसरे प्रांत में स्थानांतरित हो गईं, यह मार्टिन डिबेलियस की पॉल पुस्तक से 1953 में अंग्रेजी में अनुवादित है। पहली इन केंद्रों में से दमिश्क था, जहाँ से पॉल ने नबातियन अरब में प्रवेश किया। उसने अपना अगला केंद्र यरूशलेम बनाया होता यदि उसे एक दर्शन में अधिनियम 22:17 से 21 तक वहां न बसने की चेतावनी नहीं दी गई होती। इसलिए, वह अपने मूल स्थान टारसस वापस चला गया, और उस केंद्र से, उसने सिलिसिया में सुसमाचार का प्रचार किया और 10 अज्ञात वर्षों के सर्वोत्तम भाग के लिए सीरिया सिलिसिया और सीरिया। फिर, छोटी या लंबी अवधि के लिए, उसके क्रमिक केंद्र एंटीओक, कोरिंथ, इफिसस और रोम थे।

एक के बाद एक इन केंद्रों में काम करने और एक से दूसरे तक सड़कों पर यात्रा करते हुए सुसमाचार का प्रचार करने के दौरान उनकी कुछ उपलब्धियां उनके पत्रों में संकेतों से एकत्र की जा सकती हैं, लेकिन हमें सुसंगत रिकॉर्ड के लिए ल्यूक को धन्यवाद देना होगा। पॉल की प्रेरितिक गतिविधि के बिना हमें अनगिनत रूप से गरीब होना चाहिए, यहां तक कि पॉल के पत्रों में भी इतना कुछ है कि हमें यह समझने में कठिनाई होती है कि यदि हमारे पास अधिनियमों की कोई पुस्तक नहीं होती तो और कितना कुछ होता।

एफएफ ब्रूस ने अधिनियमों पर अपनी टिप्पणी के इस परिचयात्मक अध्याय को दो प्रार्थनाओं के साथ समाप्त किया: हे भगवान, जिसने, धन्य प्रेरित सेंट पॉल के उपदेश के माध्यम से, दुनिया भर में सुसमाचार का प्रसार किया है। हम आपसे विनती करते हैं कि हम उनके अद्भुत परिवर्तन और स्मरण को पाकर उस पवित्र सिद्धांत का पालन करके उसके प्रति अपना आभार प्रकट कर सकें जो उन्होंने हमारे प्रभु यीशु मसीह के माध्यम से सिखाया था, आमीन।

और एक और प्रार्थना: सर्वशक्तिमान ईश्वर, जो ल्यूक को, जिसकी प्रशंसा सुसमाचार में है, एक सुसमाचार प्रचारक और आत्मा का चिकित्सक कहते हैं, यह आपको प्रसन्न करे कि उसके द्वारा दिए गए सिद्धांतों की स्वास्थ्यवर्धक दवाओं से हमारे आत्माओं के सभी रोग आपके पुत्र हमारे प्रभु यीशु मसीह के गुणों के माध्यम से ठीक हो जाएं, आमीन।

अंत करने का यह कितना आनंददायक तरीका है। हमारे अगले व्याख्यान में हम प्रेरितों के काम के संदेश पर डेनिस जॉनसन के सहायक लेखन को देखेंगे।

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा ल्यूक-प्रेरितों के काम के धर्मशास्त्र पर उनके शिक्षण में है। यह सत्र 11 है, प्रेरितों के काम की ग्रंथ सूची, एफएफ ब्रूस, नए नियम में प्रेरितों के काम, प्रेरितों के काम की उत्पत्ति और उद्देश्य, प्रेरितों के काम में पॉल।